जीव उसके द्वारा नियन्त्रित हैं। पराधीन होते हुए भी जो जीव अपने को स्वतन्त्र कहता है, वह अवश्य उन्मत्त है। कम से कम बद्धावस्था में तो जीव प्रत्यक्ष रूप से सर्वथा परतन्त्र ही है। अतएव भगवद्‌गीता में दोनों, ईश्वर-तत्त्व का और जीव-तत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। साथ में, प्रकृति, काल और कर्म का भी इसमें विवेचन है। ब्रह्माण्डीय सृष्टि नाना प्रकार की क्रियाओं से परिपूर्ण है। जीव भाँतिभाँति के कर्म कर रहे हैं। भगवद्‌गीता से हमें जानना है कि ईश्वर-तत्त्व क्या है? जीव-तत्त्व क्या है? प्रकृति क्या है? ब्रह्माण्डीय सृष्टि क्या है और किस प्रकार काल द्वारा नियन्त्रित है? तथा जीवों के कर्मों का स्वरूप क्या है?

भगवद्‌गीता में स्थापित किया गया है कि पाँच प्रतिपाद्य तत्त्वों में भगवान् श्रीकृष्ण अथवा परमब्रह्म अथवा परमेश्वर अथवा परमात्मा सर्वप्रधान हैं। यह सत्य है कि परमेश्वर और जीव समान चिद्‌गुणों वाले हैं। उदाहरणार्थ जैसा गीता के अनुवर्ती अध्यायों में कहा गया है, श्रीभगवान् संसार, प्रकृति आदि के नियन्ता हैं। प्रकृति स्वतन्त्र नहीं है; वह श्रीभगवान् के नियन्त्रण में क्रिया करती है। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है, 'प्रकृति मेरी ही अध्यक्षता में कार्य करती है।' अपरा प्रकृति में अद्‌भुत घटनाओं को घटित होते देखकर हमें यह समझ लेना चाहिए कि इस सब के पीछे एक ईश्वर (नियन्ता) अवश्य है। कोई भी वस्तु बिल्कुल स्वतन्त्र नहीं हो सकती। अतः नियन्ता को भुला देना बालोचित प्रमाद ही होगा। किसी पशु-बल के बिना चलने वाला स्वचालित यन्त्र एक शिशु के लिये विस्मयकारी हो सकता है, पर बुद्धिमान् उसकी संरचना को जानता है कि वाहन के पीछे एक मनुष्य चालक का हाथ है। इसी प्रकार श्रीभगवान् एक ऐसे चालक हैं जिनके निर्देश में सब कार्य कर रहे हैं। गीता में श्रीभगवान् ने जीव को अपना अंश कहा है। स्वर्ण का एक कण भी स्वर्ण ही है और सागर का एक बूंद जल भी खारा होता है। इस न्याय के अनुसार, परमेश्वर श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश हम जीवों में भी उनके समान गुण हैं, किन्तु हममें इन गुणों का अति अल्प अंश ही विद्यमान है, क्योंकि हम लघु ईश्वर हैं। हम प्रकृति पर प्रभुत्व के लिए प्रयत्नशील हैं, जैसे वर्तमान में अन्तरिक्ष तथा ग्रहों पर आधिपत्य करने का प्रयास चल रहा है। यह प्रवृत्ति मूल रूप से श्रीकृष्ण में है और इसीलिए हममें भी है। माया पर प्रभुत्व करने की इस प्रवृत्ति के होते हुए भी हम यह जान लें कि हम परमेश्वर नहीं हैं। भगवद्‌गीता यही सिखाती है।

भौतिक प्रकृति क्या है? भगवद्‌गीता में इसे 'अपरा' प्रकृति कहा गया है। जीवतत्त्व 'परा प्रकृति' है। प्रकृति परा हो अथवा अपरा, वह नित्य परमेश्वर के आधीन है। 'प्रकृति' स्त्रीलिंग है तथा श्रीभगवान् के द्वारा उसी भाँति नियन्त्रित है, जैसे पत्नी की क्रियाओं का पति नियन्ता होता है। प्रकृति नित्य श्रीभगवान् के आधीन रहती है, जो उसके अध्यक्ष हैं। इस प्रकार परा (जीव) तथा अपरा दानों ही प्रकृतियाँ श्रीभगवान् के आधीन हैं। गीता के अनुसार श्रीभगवान् के भिन्न-अंश होते हुए भी जीव 'प्रकृति' की कोटि में आते हैं। सातवें अध्याय के श्लोक पाँच में स्पष्ट उल्लेख